वी.यू. में ''एक्वा क्लीनिक्स एण्ड एक्वाप्रनेरशिप'' विकास कार्यक्रम (AC & ADP) विषय पर 30 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन

जबलपुर। दिनांक 26.03.2019 को नानाजी देशमुख पशुचिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय, जबलपुर के अंर्तगत राष्ट्रीय कृषि विस्तार प्रबंध संस्थान (मैनेज), हैदराबाद, राष्ट्रीय मत्स्यकीय विकास बोर्ड एन.एफ.डी.बी. हैदराबाद एवं मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय, जबलपुर के संयुक्त तत्वाधान में ''एक्वा क्लीनिक्स एण्ड एक्वाप्रनेरशिप'' विकास कार्यक्रम (AC & ADP) पर एक माह (25 फरवरी 2019 से 26 मार्च 2019) का प्रशिक्षण कार्यक्रम को समापन हुआ। प्रशिक्षण का आयोजक डॉ. एस.के. महाजन, प्रभारी अधिष्ठाता, मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय, जबलपुर ने जानकारी देते हुये कहा कि इस प्रशिक्षण में महाराष्ट्र, उत्तरप्रदेश, बिहार, एवं मध्यप्रदेश के विभिन्न जिलों से कुल 30 प्रशिक्षणार्थीयों ने भाग लिया। इस प्रशिक्षण मे 3 सप्ताह का सैद्वांतिक प्रशिक्षण जिस में कुल 48 व्याख्यान एवं 15 व्यवसायिक व व्यवहारिक प्रशिक्षण एवं भ्रमण जो कि भा.कृ.अ.प. सीफे, मुम्बई व मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय, रत्नागिरी के आसपास के 10 विकसित मत्स्य प्रक्षेत्रों का भ्रमण कराया गया।

इस कार्यक्रम में 30 सफल प्रशिक्षणार्थीयों को मुख्य अतिथि डॉ. पी.के.बीसेन, कुलपति, ज.ने.कृ.वि.वि. एवं अतिथि डॉ. प्रयाग दत्त जुयाल, कुलपति, नानाजी देशमुख पशुचिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय, जबलपुर के करकमलों द्वारा प्रशिक्षण प्रमाण पत्र वितरित किये गये। तत्पश्चात् प्रशिक्षणार्थीयों विनोद कुमार शर्मा, जबलपुर एवं श्री सुशांत, महाराष्ट्र से आये प्रशिक्षणार्थी द्वारा प्रशिक्षण अनुभव साझा किये गये जिनमें– मत्स्य पालन, विपणन, संचयन, प्रसंस्करण, प्रोजेक्ट बनाना, फंडिग एवं सफल कृषकों के अनुभव से प्राप्त जानकारियाँ सम्मिलित रही।

कार्यक्रम के दौरान मुख्य अतिथि डॉ. पी.के. बिसेन, कुलपति जी ने आसंदी से अपने उद्बोधन में कहा कि कृषि वि.वि. एवं वी.यू. एक दूसरे के पूरक है और भविष्य में भी रहेंगे, तभी समन्वित अनुसंधान व विस्तार गतिविधियों के फलस्वरूप ग्रामीण क्षेत्रों में एकीकृत कृषि प्रणाली के माध्यम से ही कृषकों से आय वृद्धि मुं दो–गुनी आय वृद्धि संभव है। उद्बोधन की श्रंखला में कार्यक्रम के अतिथि डॉ. प्रयाग दत्त जुयाल, कुलपति जी ने विचार व्यक्त करते हुये बताया कि भारत वर्ष

मछली उत्पादन में दूसरा सबसे बड़ा चीन के बाद देश है, वर्ष 2016–17 में कुल मत्स्य उत्पादन 11.41 मिलीयन मेट्रिक टन रहा। मत्स्य एवं मत्स्य उत्पाद मानव स्वस्थ्य में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं, क्योंकि इस पौष्टिक खाद्य पदार्थ में प्रचुर प्रोटीन, ओमेगा–3 एवं मछली के तेल में विटामिन ''ए'' की मात्रा विद्यमान रहती है। मत्स्य पालन की मध्यप्रदेश की अपार संभावनायें हैं, लेकिन यह तभी संभव है, जब हमारे प्रशिक्षणार्थी इस प्रशिक्षण के उपरांत एग्रो क्लीनिक्स एवं एक्वप्रेनेयोरशिप कार्यक्रम को अंगीकृत कर इस विस्तृत रूप में अपने–अपने क्षेत्रों में इसके महत्व का प्रचार व प्रसार करें। इस प्रशिक्षण के बाद 6 प्रशिक्षणार्थीयों के प्रोजेक्ट प्रोपोजल भी बनकर तैयार हो चुके हैं, जिन्हें आगामी समय में अमलीजामा पहनाया जावेगा।

इस कार्यक्रम में डॉ. एस.एन. परमार, डॉ. वाय.पी. साहनी, डॉ. एस.के. जैन, डॉ. जे.के. भारद्वाज, डॉ. ए.के. गौर, डॉ. श्रीकांत जोशी, डॉ. अमिता तिवारी एवं डॉ. माधुरी शर्मा की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. सोना दुबे, प्रशिक्षण समन्वयक, मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय, जबलपुर ने किया। कार्यक्रम सामूहिक राष्ट्रगान के साथ सम्पन हुआ।